अंतरा-शब्दशक्ति

(काव्य संग्रह)

अनकहे शब्द

डॉ. लेखा रमेश

अनकहे शब्द

(काव्य संग्रह)

डॉ. लेखा रमेश

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-18-6

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ. लेखा रमेश

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Anakahe Shabd' by 'Dr Leka Ramesh'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

शब्दों से परे...

शब्द... जब मुखरित होता है तो बड़े- बड़े साम्राज्य टूटकर गिर पड़ते हैं. जब मौन धारण करते हैं तो वह भी अभिव्यंजना के अलग माध्यम बनकर प्रकट होते हैं. और कभी कागज़ पर चित्र भी उकेरने में कामयाब होता है. कभी मोहब्बत तो कभी जज़्बात और कभी कल्पनाएँ बनकर हमारे मन के एहसासों में छिपे रहते हैं. शब्द कभी अनायास बहते रहते हैं तो कभी डुबकियाँ लगाते हैं, कभी अतल गहन में डूब जाते हैं, फिर मन की गहराईयों से उभरकर श्रोता के कानों को मुखरित करते हैं. मन के उन अनकहे शब्दों को प्रकाश में लाने का प्रयास ही मैंने अपने इस काव्य संग्रह के माध्यम से किया है.

'अनकहे शब्द पंद्रह कविताओं का संकलन है. मैंने इस कविता संग्रह में मन के एहसासों के साथ - साथ समकालीन दौर के कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों को भी लेकर आपके सामने उपस्थित करने का प्रयास किया है. हमेशा हम जीवन में कई एहसासों को जीना भूल जाते हैं. अबोध मन में मुखरित होने पर भी कई बार शब्दबद्ध करने के लिए विमुख होते हैं. जैसे 'गन्दगी' कविता में मैंने बताया है ध्वनि प्रदूषण के सम्बन्ध में . ध्वनि प्रदूषण से हम सब अवगत हैं, पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए हिचकिचाते हैं. 'मेरी आवाज़' स्त्री के स्वत्व की अभिव्यंजना है तो 'सुनहली शाम' मानवता की निरंतरता का प्रयास है. 'कामेर्सिअल ब्रेक' धारावाहिकों के आकर्षण में डूबकर अपने अस्तित्व तक को भूल जानेवाली औरतों का चित्रण करती है. 'विवाह' आज भी परोक्ष रूप से समाज में उपस्थित विवाह से जुडी सौदेबाजी को लेकर लिखी गयी कविता है. इसके आलावा मन की भावुकता से उपजे कुछ कविताओं को भी इस संकलन में शामिल किया गया है. उम्मीद है मेरी ये कोशिश सबको पसंद आएगी.

डॉ. लेखा रमेश

अनुक्रमणिका

1. तलाश	5
2. मौन	6
3. सुनहली शाम	7
4. विवाह	8
5. कमेर्सिअल ब्रेक	9
6. बारिश	10
7. मेरी आवाज़	11
8. गन्दगी बनाम योगसाधना	12
9. आकांक्षा	13
10.चित्रपट	14
11.मातृत्व	15
12.अनकहे शब्द	16

तलाश

नदी के उस पार से
वह कौन - सी पंछी है
जो गा रही है इतने दर्द भरी आवाज़ में
दिवस के अवसान में जब मेरा घर डूब रहा है
सुनहली अंधकार में
क्या उसका दिल किसी ने तोडा है?
क्या वह भी मेरी तरह अपना प्रकाश खो चुकी है?
मैं नहीं चाह सकती
उसका पीछा करना
के मेरी आवाज़ उसकी दिशा पकडे
क्या कोई बता पाएगा उसका नाम?
और किस पेड़ पर है उसका घर !
या तुम सब मेरी तरह अनजान हो ?
शायद मैं तुम्हें बाँट सकती हूँ
अपने दर्द-भरे दिल की गर्मी'
ताकि तुम भर सको अपने आवाज़ में अंगारे
ओ... दर्द - भरे गीत गानेवाली पंछी...

मौन

मौन
किस प्रकार प्रणय बनता है!
आत्मा भी चहके बिना
इतने निशब्द होकर
एक शब्द के पीछे तुम छिपे हो
प्रेम को
कई टुकड़ों में बांट के मैं भी....
दिन
बीतता तुम्हारी यादों में है
रातें
तुम से जुड़े सपनों में...
आवाजें
डूब रही है शून्य में
एहसासों के कैदी होकर
तुम जुग जुग जियो...
दृष्टिपथ पर,
एक बार ही सही,
मुझे भी जोड़ दो...
इन पलों में मैं
'खुद' को खो देती हूँ ।
तुम्हारी पंक्तियों के बीच के
मौन के सामान
'हम' को भी ।

सुनहली शाम

सुनहली धूप में,
समुन्दर में थे हज़ार सूरज,
हर तरफ उमंग, लहरों का संगीत
दुनिया के ग़मों से दूर
अपनी ज़िन्दगी से नाराज़
मैं भी चल रही थी अपने ख्यालों में ।
अचानक वह सामने आया,
धूप की किरणों को आँखों में लिए,
उस शाम को यादगार बनाने,
सारी खुशियों से दूर
अपने में खोया हुआ ।
मुझसे पूछाः " बलून लेंगी आप?"
उस नन्हे चेहरे पर थी, आशा की किरणें
सावला रंग, दुबला शरीर
जैसे उसके दुखों का प्रतीक
मैंने खरीद डाला उसका सारा माल
उसे खिलाई चाँकलेट
खरीद दिए उसे नए कपड़े, खिलौने
शायद कुछ घंटों के लिए ही सही
मिटा दिए मैंने,
उसके चेहरे से, दुःख की रेखाएँ ।
उस शाम मैंने पायी,
एक अनाथ की मुस्कान,
जिसमें हज़ार सूरजों से ज़्यादा रोशनी थी ।

विवाह

एक बड़ा सौदा होने जा रहा है...
फायदे- नुक्सान पर ध्यान न देना तुम
हमेशा अपनी 'किस्मत' ही समझना
स्वयं को, जेवरों को, बर्तनों को...
सब चीज़ों को बदला जा रहा है...
सड़क के किनारे, झाड़ियों के बीच
मिट्टी में क्यों गाड़ दिए गए !
उसके सपने, खुशियाँ
बरसों से संजोये मुक्ति की कामनाएं...
भेदनेवाले शब्द
उठकर आधे रास्ते में ही रुकी
दायें हाथ की तर्जनी उंगली
के पार्श्व की चमक...
"विवाह! अपने खो देते हैं उसको...
और वह
खो देती है स्वयं को...."

कमेर्सिअल ब्रेक

चैनलों की बौछार में
आँखें चार करके वह बैठी रही !
उसे थोड़ी सांस लेनी है
एक गाना गुनगुनाना है, फिर
बिस्तर पकडे बाप को
थोडा पानी पिलाना है
वह खुद से ही बोलती गयी
" अब एक कमेर्सिअल ब्रेक हो जाय"
लेकिन स्क्रीन में है की धारावाहिक
रुकने का नाम ही नहीं लेती...
एक के बाद एक करके
निहत्था अर्जुन सामने खड़ा है
उसके आगे जेनिफर लोपज़ की
चमकती मुस्कान
इसलिए पलकें तक न बिचकाए
गाने की एक पंक्ति भी न याद करके
पिताजी को एक बूँद पानी भी न देके
बाहर हो रही मूसलाधार वर्षा से बेखबर
अपना मन और शरीर
एक वाल्मीक के अन्दर बंद होने तक
वह बैठी रही
एक अनबूझी कहानी की तरह
पर तब भी
उसका मन कहता रहा,
"अब एक कमेर्सिअल ब्रेक चाहिए ।"

बारिश

एक
प्यार का एक नन्हा - सा पौधा
जड़ ज़माने लगा है
मेरे मन में
खुशियों की बौछार में
अब एक अज्ञात एहसास बन
उसमें कोम्पलें खिलने लगी हैं ।
और में
उसके फूलने - फलने का
इन्द्जार करने लगी...
दो
एक कागज़ के टुकड़े पर
वह हमेशा के लिए
प्यार को
अलविदा कह गया...
अब वह पौधा
नहाएगी आंसुओं में...
नहीं बढ़ेगी, फूलेगी - फलेगी
और न ही
अब उसे
बारिश का इन्द्जार रहेगा...

मेरी आवाज़

मेरी आवाज़, मेरे शब्द
तुम उसे नियंत्रित नहीं कर सकते
मेरा शरीर, मेरा स्वत्वबोध
तुम उस पर अधिकार नहीं जमा सकते
मैं एक स्त्री हूँ
और स्त्री सहज सोच भी रखती हूँ
तुम मेरे भीतर रहते हो
पर
इसका यह मतलब नहीं कि
तुम्हारा प्रभुत्व मझ पर जम गया
हां, मैं एक स्त्री हूँ...
और उससे भी ज़्यादा
एक व्यक्ति और मनुष्य भी हूँ ।
मुझे भी कुछ अधिकार प्राप्त है
मेरी अपनी आवाज़ है, मेरा अपना अस्तित्व है
मेरे शरीर के तर्ज पर
मत करो मेरा मूल्यांकन
मुझे पहचानो, मेरे स्वत्व को
हां, मैं एक औरत ही हूँ... ।

गन्दगी बनाम योगसाधना

गंदगी से मुक्त विश्व की
हम कामना करते हैं
गन्दगी...गन्दगी...
हर जगह गन्दगी
पर इससे भी बड़ा प्रदूषण है
ध्वनि प्रदूषण
जो हमारे कानों में घुसकर
नसों को मंद करती है
नहीं चाहिए लौड़ स्पीकरें
नहीं चाहिए ऊंची आवाजें
मौन होकर
योगी बनना है अभिकाम्य
थोडा समय मिले तो
थोडा पैसा है तो
आप, हम कोई भी
बन सकता है योगी
निशब्द हो जाओ
निस्संग बन जाओ
कर्मफल की कामना त्यागकर
अपनी साँसों के क्रम को
नियंत्रित करते जाओ ।

आकांक्षा

मैंने सुना है
आकांक्षाएं बेलगाम घोड़ों की तरह होती है
नयी ऊँचाईयाँ छूने की
नीले विस्तृत नभ में
पंछियों की तरह
स्वछंद घूमने की
अपने अस्तित्व की जुगनू से
विश्व को रोशन करने की...
पर वे कहते हैं,
घोड़ों को बेलगाम छोड़ते नहीं
क्योंकि तुम स्त्री हो
अपनी लक्ष्मण रेखा के भीतर
बना लो अपना आसमां
पर कब तक
अपने आदर्श रूप की नाप में
स्वयं को ढालती रहेगी स्त्री !
अपनी आकांक्षाओं की भ्रूणहत्या कर
स्वयं जिंदा होने के
भ्रम को पालती रहेगी स्त्री !!
कंचन के पिंजरे में सही
बंधन तो बंधन ही है...

चित्रपट

मैं
तुम्हारे संग
रेत पर चलना चाहती हूँ
तुम से सटकर
पानी की छींटों में नहाते
लहरों के फेनों की आहोश में
पैरों को रखकर
तुम्हारे हाथों की उँगलियों में
अपनी जकड़कर
लहरों की लालिमा को
निहारना चाहती हूँ ।
उस वक्त
तुम्हारी बाहों के बीच मैं
ज़िन्दगी की नयी परिभाषा रचूँगी
सूरज की ओर उन्मुख
तुम्हारी आँखों में समाहित
नीले - लाल विश्वों में
तल्लीन हो जाऊंगी ॥

मातृत्व

तुम
मेरे शीतल भोर का सपना

तुम्हारी छुवन जैसे
ठंडी हवा हो छू रही गालों को मेरे

कई बार महसूस कर चुकी हूँ
तेरे नन्हे पैरों को खेलते हुए मेरे मन में

और मैं सुन भी सकती हूँ
तेरी किलकारियों को मेरे कानों में
और मैं
खोजने लगती हूँ आवाज़ की दिशा में

और हमेशा से चाहती हूँ
के मैं तुझे देखूं

पर अचानक
तुम गायब हुए मेरे सपनों से
क्या तुम अब नहीं आओगे
मेरे प्यारे सपनों को नहीं लौटाओगे ... ?

अनकहे शब्द

अनकहे शब्द
एक अतृप्त आत्मा - सी
मेरे मन मस्तिष्क में निरुद्देश्य घूमते...
मेरी सुगंध पूरित यात्राएं
रोते हुए सीढियां उतरकर अपनी यात्रा प्रारंभ करते हैं...
जब ख़ामोशी झकझोरती मुझको...
तय करने लगती हूँ के मैंने क्या खोया!
तुम्हारा दिया हुआ लाल फूल...
याद दिलाती है उस अतिथि की
जो फिर कभी न आएगा...
जब तुमने नाव का नियंत्रण खोया,
तुम्हारी आँखें क्यों नम थे ?
क्या वे तुम्हारे मृत अनकहे शब्दों के लिए थे ,
या फिर उस अनंत अकेलेपन के लिए !!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ. लेखा रमेश

जन्म - केरल के त्रिश्शूर जिले में, बचपन कोशिकोड में बीता, बचपन से ही साहित्य में रुचि

माता-पिता - एम. द्रौपदी तथा वी. गोपालन नायर

पति - एम. रमेश नारायणन

शिक्षा - एम.ए., एम.फिल. पी.एच.डी., यु.जी.सी. नेट, बी.एड. तथा अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

मो. - 9176312341

सम्प्रति - सहायक प्राध्यापक- हिन्दी स्नातकोत्तर तथा शोध केन्द्र, एन.एस.एस. हिन्दू कॉलेज, चंगानाचेरी, कोट्टायम 7 686102, केरल।

प्रकाशन आलोचना ग्रंथ - 1. कुसम अंसल : स्त्री तर्कशक्ति और बौद्धिकता के कथाकार

2. श्रीलाल शुक्ल का औपन्यासिक यथार्थ।

3. समकालीन साहित्य : नयी पीढ़ी की सोच।

4. हिन्दी की नयी लेखिकाएं (मलयालम में)

अनुवाद - 1. 'भूतनाथ'(6 खण्ड),

2. 'एक जमीन अपनी' उपन्यासों का मलयालम में अनुवाद।

3. दो अन्य ग्रंथ शीघ्र प्रकाश्य।

- हिन्दी तथा मलयालम पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में शोध आलेख तथा अनुवाद प्रकाशित।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-18-6

मूल्य- 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com